डॉ० शशिशेखर तिवारी — भोजपुरी लोकोक्तियाँ — बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
1970

P. 64-65: कलकत्ता: "घोड़ा गाड़ी नोना पानी अक्खर राँड़ के धक्का।
एह तीनों से बचल रहे, तऽ सेवे करे कलकत्ता॥"

(घोड़ा-गाड़ी, खारा पानी और बदचलन औरतों की संगति - इन तीनों से जो बचा रहता है, वह कलकत्ता में मौज करता है।)

यह लोकोक्ति कलकत्ता से संबद्ध है। भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद कलकत्ता विश्व के अंतर्राष्ट्रीय नगर के रूप में चमका। यहाँ पहले जब ट्राम, मोटर आदि आधुनिक सवारियों का चलन कम था, तब घोड़ा-गाड़ी (फिटिन, बग्घी, टमटम) की सवारी प्रचलित थी। इसलिए उस समय कलकत्ता की भरी सड़कों पर चलने वालों के लोगों को इन घोड़ा-गाड़ियों के धक्के और टक्कर का भय बराबर बना रहता था।

कंपनी-शासन में कलकत्ता की पेयजल की व्यवस्था ठीक नहीं थी। कलकत्ता में रहने वाले परदेशियों को खारा पानी पीने में बहुत दिक्कत होती थी। कुछ लोग तो इस पानी के पीने से बीमार भी पड़ जाते थे। (एक भोजपुरी लोकगीत में कलकत्ता से बीमार और कमजोर होकर घर लौटे हुए पति की दशा पर उसकी पत्नी द्वारा हार्दिक क्षोभ प्रकट किया गया है। गीत की कड़ियाँ हैं:—

"रेलिया से अइलऽ हो जहजिया से अइलऽ हो कि कल में दाढ़ा लागलु ना।
पीअलऽ चाँपा कल के पनियाँ, कल में दाढ़ा लागलु ना।
राजा करिया होके अइलऽ हो कि कल में दाढ़ा लागलु ना।")

नगर में निगम की स्थापना के बाद पेयजल की व्यवस्था कुछ ठीक हो गई। यह कलकत्ता गुंडागर्दी के लिए भी प्रसिद्ध है। नगर में वेश्याओं और गुंडों की बहुसंख्या के कारण व्यभिचार और अवैध रोजगारों को प्रोत्साहन मिलता है। परदेशी यात्री कभी-कभी इन दुष्ट नारियों के फेरे में पड़ जाते हैं और प्राण और धन भी गँवा बैठते हैं।

जे गइल कलकत्ता से भइल खाकपत्थर कलकत्ता।
(जो कलकत्ता गया, वह खूब दुर्गति में फँसा)

पैसे की खोज में बहुत से लोग कलकत्ता जाते हैं। किंतु धार्मिक संस्कार और ऊँची शिक्षा के अभाव में ये लोग कलकत्ता जैसे शहर में

युव- युवक में नौकरी नहीं मिलने पर बिना खाये-पिये खुली सड़कों पर कई दिन दिन गुजार देते हैं।